पर्यावरण जीवन का आधार है

डॉ उषा शर्मा
व्याख्याता–हिन्दी साहित्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजसमंद

पर्यावरण क्या है – परि + आवरण अर्थात परि आवरण, परिवेष, आसपास या चारों ओर का संसार। 'जब हम सम्पूर्ण पर्यावरण या समग्र प्रकृति की बात करते है तो उसमें नदी, जल, जंगल, पहाड़, पशु, पक्षी, हवा ही सम्मिलित नही है, बल्कि हमारे सामाजिक, आर्थिक सरोकार और सांस्कृतिक, राजनैतिक परिस्थितियां भी सम्मिलित होती है। इस तरह पर्यावरण का फलक काफी विस्तृत हो जाता है। प्राकृतिक पर्यावरण हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक पर्यावरण को अधिक प्रभावित करता है क्यों कि विकास की धुरी में प्राकृतिक संसाधनों स्त्रोतों का प्रमुख स्थान रहता है।'

'सामान्यतः पर्यावरण को मनुष्य के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है और मनुष्य को एक अलग इकाई और उसके चारों ओर व्याप्त अन्य समस्त चीजों को उसका पर्यावरण घोषित कर दिया जाता हैं, किन्तु यहां यह भी ध्यातव्य है कि अभी भी इस धरती पर बहुत सी मानव सभ्यताएं हैं जो अपने को पर्यावरण से अलग नहीं मानती और उनकी नजर में समस्त प्रकृति एक ही इकाई है, जिसका मनुष्य भी एक हिस्सा हैं।'[1]

''पर्यावरण से आषय उस वातावरण से है जिसमे संपूर्ण जगत या ब्रह्माड या जीव जगत घिरा हुआ है। पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है 'चारों ओर से घेरे हुए'। पर्यावरण वह परिवृत है जो जन्तु तथा वनस्पति समुदाय को चारों ओर से घेरे हुए है तथा उनके जीवन एवं क्रियाओं पर प्रभाव डालता है। पर्यावरण किसी एक तंत्र का नाम नही अपितु अनेक तंत्रों का सामूहिक नाम है जो संपूर्ण जीव जगत को नियंत्रित करते हैं एवं एक दूसरे से अन्तः सबंधित है तथा जिसका सामूहिक रूप होता है।'' पश्चिम की दृष्टि में आधुनिक विकास ने भोगवादी संस्कृति को अपनाया है उसे ही बलषाली बनाया है इसी भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को अपना शत्रु मान लिया है। मनुष्य प्रकृति का स्वामी बन बैठा और औद्योगिकी का जो जाल उसने फैलाया है उसमें प्रकृति का शोषण प्रमुख लक्ष्य है। जबकी भारतीय दृष्टि में विकास में प्रकृति के शोषण की प्रवृति न हो कर उसके संरक्षण की, समतोल और श्रद्धा की प्रवृति रही है। मनुष्य प्रकृति का स्वामी नही उसकी संतान है। प्रकृति के साथ भारतीय जन का यही पारम्परिक रिष्ता भारत की 'अरण्य संस्कृति' हैं। ''रविन्द्र नाथ ठाकुर से जब भारतीय संस्कृति के बारे में पूछा गया तो उनका उत्तर था भारत की संस्कृति न गाँवों की है न शहरों, नगरों की, भारतीय संस्कृति अरण्य संस्कृति है।''

''यही अरण्य संस्कृति आज के आधुनिक समाज में पर्यावरण संस्कृति के रूप में हमारे सामने आई है। भारतीय दृष्टि हमें बताती है कि यह प्रकृति सबका पेट भर सकती है परन्तु किसी एक का भी लालच पूरा नही कर सकती है।''

'हिमगिरि के उत्तुंग षिखर पर
बैठ षिला की शीतल छांह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह
प्रसाद ने प्रकृति को ही सौंदर्य और सौंदर्य को ही प्रकृति माना हैं।'[2]

मनुष्य के लिये प्रकृति अनुपम अनमोल है। प्रकृति के सहज सन्तुलन में जब किसी प्रकार का बिगाड़ होता है तो उसकी सर्वाधिक जिम्मेदारी मनुष्य (समाज) की होती है। आज पर्यावरण और प्रदूषण जैसे शब्दों का काफी शोर है। पष्चिमी जगत में 'एनवायर्नमेन्ट, पोल्यूषन' जैसे शब्दों पर चिन्ता व्यक्त होने लगी, भारत में भी यह शोर तेज हो गया। वास्तव में जिसे आधुनिक शब्दावली में पर्यावरण परिवेषिकी और प्रदूषण कहते है उसे भारतीय पारस्परिक शब्दावली में प्रकृति कहा जाता है। जो भारतीय समाज और संस्कृति का पर्याय है,

प्रकृति हमारे लिये सदैव श्रृद्धास्पद रही है। भारतीय दृष्टि में मनुष्य प्रकृति का स्वामी नही उसकी संतान है। भारतीय संस्कृति का प्रकृति के साथ यही पारम्परिक रिष्ता भारत की अरण्य संस्कृति है।
भूगोल परिभाषा कोष के अनुसार – 'पर्यावरण चारों ओर की उन बाहरी दषाओं का संपूर्ण योग है, जिसके अन्दर एक जीव अथवा समुदाय रहता है या कोई वस्तु उपस्थित रहती है।'

'पर्यावरण अपनी सम्पूर्णता में एक इकाई है जिसमें अजैविक और जैविक संघटन आपस में विभिन्न अन्तर्क्रियाओं द्वारा संबद्ध और अंतर्गुम्फित होते हैं। इसकी यह विषेषता इसे एक पारितंत्र का रुप प्रदान करती है क्योंकि पारिस्थितिक तंत्र या पारितंत्र पृथ्वी के किसी क्षेत्र में समस्त जैविक और अजैविक तत्वों के अंतर्सम्बंधित समुच्चय को कहते हैं। अतः पर्यावरण भी एक पारितंत्र हैं।'[3]

वर्तमान युग में पर्यावरण प्रदूषण अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर चिन्ता का विषय बना हुआ है, वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण के लिए न केवल भारत ही चिन्तित है, बल्कि समस्त विष्व भी चिन्तित है और आज संपूर्ण विश्व में पर्यावरण संकट है जिसे जीवन में आसानी से देखा जा सकता है। जितने ही हम विकास की ओर बढ़ते हैं, उतना ही पर्यावरण असंतुलित होता जाता हैं। जितनी विकास की अवस्थाएं सीमित है पर्यावरण पर्याप्त संतुलित है। आज भी पर्यावरण जागरूकता का अभाव है। पर्यावरण क्या है, हमारे कार्य पर्यावरण को क्या लाभ अथवा हानि पहुँचाते हैं, पर्यावरण से हमारी पारस्परिक निर्भरता की जानकारी, स्वच्छ पर्यावरण बनाये रखने के लाभ आदि अनेक बातें पर्यावरण जागरूकता से सम्बधित है। इसमें पर्यावरण के भौतिक व जैविक पक्षों की जानकारी तथा निर्भरता का बोध होता है। पर्यावरण संबंधी ज्ञान एवं शोध की प्राप्ति होती है। पर्यावरण जागरूकता में निम्न बातें शामिल की जाती है –
1 पर्यावरण एवं मनुष्य की पारस्परिक निर्भरता की पहचान एवं पर्यावरणीय विकास को समझना
2 पर्यावरण संरक्षण के उपाय करना
3 पर्यावरण स्रोंतो का समुचित एवं उपयुक्त दक्षता के साथ विदोहन करना।
4 पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाना।

हमारें प्राचीनतम ग्रन्थ वेद, महाभारत और रामायण है। दर्षन ज्ञान और चरित्र हर दृष्टि से इन ग्रन्थों में बेजोड़ निरूपण हुआ है यह अरण्य संस्कृति की ही देन है। संस्कृति का विकास सतत चलता रहा, आज आधुनिक काल में विज्ञान और प्रोद्योगिकी से हमारा सम्पूर्ण प्रकृति संन्तुलन या पर्यावरण विकास के साथ विकृत भी हो रहा है।

आधुनिक काल में प्रकृति के सौंदर्य का उपादान क्रूर द्दष्टि का षिकार होना प्रारंभ हो जाता है मैथिलीषरण गुप्त के साकेत में चंद्र ज्योसना में रात्रि कालीन बेला की प्राकृतिक छटा का मुग्धकारी वर्णन हैं –

'चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही है जल थल में
स्वच्छ चांदनी बिछी हुई है
अवनि और अबंर तल में'[4]

पर्यावरण का विनाष कई तरीकों से हुआ है उद्योग की स्थापना के लिए घने जंगल काटे गये इससे कृषि का विकास हुआ। एक तरफ सैंकड़ों पेड़ कटे तो दूसरी तरफ प्राकृतिक वातावरण में विभिन्न गैसें और कचरा मिलने लगा। कच्चे माल के लिए खाने काटी गई, पेड़ काटे गए एवं खनिज पदार्थो का उपयोग करने वाले दूसरे उद्योग खड़े किए गए। उद्योग होगे तो मजदूर और उनका परिवार भी होगा। सब मिल जुल कर धीरे–धीरे एक बड़ा षहर बन जाता है। लोगों का जीवन स्तर सुधरने के पश्चात सुविधाऐं भी बढ़ती हैं विभिन्न प्रकार के वाहन, विद्युत आपूर्ति, जल आपूर्ति, वातानुकूलित सयंत्र और भी कई सुविधाएं जीवन को सुगम तो बनाती है पर पर्यावरण को नुकसान भी पहुँचाती है।

पिछले कुछ अर्से से पर्यावरणवादी टिकाउ विकास की बातें कर रहे है। टिकाउ विकास यानी ऐसा विकास जो लम्बे समय तक हमारा साथ दे, हमारे प्राकृतिक संसाधनों को बिना नुकसान पहुँचाये उनकी लम्बे समय तक उपलब्धता बनायें रखे, हमारी आर्थिक वृद्धि भी बाधित न हो और पर्यावरण भी शुद्ध बना रहे, साथ ही प्राकृतिक विनाष भी नही हो। कुल मिला कर यही है कि स्थायी विकास और टिकाउ विकास। हमारे प्राकृतिक संसाधन अनुकूल और अमिट नहीं है। हमारे जंगल, कोयला, पेट्रोल और पीने लायक साफ पानी सभी बड़ी तेजी से घट रहे है।

पिछले 30 वर्षों से स्वच्छ पर्यावरण लिए कार्य किए जा रहे है। बसों पर दिवारों पर नारे लिखे जा रहे है, करोड़ों का बजट पारित किया जा रहा है। निःसंदेह यह एक कठिन कार्य है और आम जनता की भागीदारी के बिना

स्वच्छ पर्यावरण असंभव है। प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ–सिर्फ एक–एक ही संकल्प ले जैसे प्लास्टिक की थैंलियों का उपयोग नहीं करेंगे, ऑयल की एक बून्द भी मिट्टी पर नहीं पड़ने देंगे, एक–एक पेड़ लगायेंगें। जो संम्भव हो वों करे, परन्तु दृढ़ता की कमी से आगे बढ़े कदम रूक जाते हैं या मेरे अकेले करने से क्या होगा, का विचार वही खड़ा कर देता है।

वैज्ञानिक व औद्योगिक विकास ने हमारे सामने पर्यावरण की समस्या को अत्यन्त गंभीर बना दिया है प्रदूषण से बचने की गम्भीर समस्या हमारे लिए निरन्तर उग्र रूप धारण करती जा रही है। आज पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने के अनेक उपायों पर चर्चा होने लगी है किन्तु इस क्षेत्र में हमारी सोच अर्थ प्रधान होती जा रही है। आज समाज के लिए पर्यावरण प्रदूषण की समस्या काल के समान मुँह खोले खड़ी है, जिसमें हजारों जीवों को ग्रास बनाती है।

'ज्यादातर पर्यावरणीय समस्याएं पर्यावरणीय अवनयन और मानव जनसंख्या और मानव द्वारा संसाधनों के उपभोग में वृद्धि से जुड़ी हैं। पर्यावरणीय अवनयन के अंतर्गत पर्यावरण में होने वाले वे सारे परिवर्तन आते हैं जो अवांछनीय हैं।'[5]

'मनुष्य वैज्ञानिक और तकनिकी रुप से अपने द्वारा किये गये परिवर्तनों से नुकसान को कितना कम करने में सक्षम है, आर्थिक और राजनैतिक हितों की टकराव में पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा रहा है और मनुष्यता अपने पर्यावरण के प्रति कितने जागरुक है, यह आज के ज्वलंत प्रष्न हैं।'[6]

पर्यावरण प्रदूषण

वे सभी दषायें जो एक प्राणी के अस्तित्व के लिये आवष्यक है अथवा उसकों चारों ओर से घेरे हुए है, उसका पर्यावरण कहलाता है। वातावरण के भौतिक, रासायनिक, जीव वैज्ञानिक अवस्था में इस प्रकार का परिर्वतन जिसमें मानव, जीवजन्तु वनस्पति अथवा सौन्दर्य प्रतिकों को हानि पहुंचे, प्रदूषण कहलाता है। यदि इसे दूसरे शब्दों में परिभाषित करें तो प्रकृति के द्वारा प्रदत्त सामान्य वातावरण में भौतिक, रासायनिक या जैविक कारणों से होने वाला हानिकारक परिवर्तन प्रदूषण है।

संयुक्त राष्ट्र के मानव पर्यावरण सम्मेलन में प्रदूषण की परिभाषा ''प्रदूषक वे सभी पदार्थ और ऊर्जा है जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मनुष्य के स्वास्थ्य और उसके संसाधनों को हानि पहुँचाते है। यह मनुष्य की वांछित गतिविधियों का अवांछित प्रभाव है। इन अर्थों में कृषि, उद्योग और औषधियाँ मनुष्य के लिए उपयोगी होने पर भी प्रदूषण में सहायक हैं।'' दूसरे षब्दों में 'प्रदूषण वह कोई भी पदार्थ है जो अनुचित स्थान पर, अनुचित समय पर, अनुचित मात्रा में पाया जाता है।'

रोजाना हजारों वृक्षों की बली चढ़ाई जा रही है, वनों को नष्ट किया जा रहा है, कृषि भूमि का व्यवसायिक स्वरूप बनता जा रहा है। प्राकृतिक सम्पदा का हनन हो रहा है। वन्य जीव जन्तुओं के रहने के स्थानों पर मानव निवास कर रहा है या व्यवसाय हो रहा है। उद्योगों को बढ़ाने के लिए अमूल्य वनस्पति का नाष कर धन कमाया जा रहा हैं। साथ ही भारी भरकम मषीनों से खनन कार्य करने से अनावष्यक जगह भी बेकार की जा रही है। आसपास की कठोर भूमि भी नरम हो कर उसका कटाव होना षुरू हो गया है। इन मषीनों से निकलने वाला धुंआ एवं कर्कष आवाज आसपास के पूरे पर्यावरण को दूषित कर रहा है।

'पर्यावरणीय समस्याएं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवनषैली के बारे में पुनर्विचार के लिये प्रेरित कर रही हैं और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की चर्चा है।'[7]

पर्यावरण का महत्त्व प्रभाव

आज के युग में बढ़ते प्रदूषण का सर्वाधिक महत्त्व इसलिए है कि पर्यावरण जीवन का आधार है। पृथ्वी तल पर जैविक विकास संवर्द्धन और रक्षा के लिए पर्यावरण ऐसी दषा का निर्माण करता है जिसके बिना जीवन की कल्पना असम्भव है। आज सम्पूर्ण मानव जगत पर्यावरण सम्बन्धित अनेक समस्याओं से ग्रसित है। पर्यावरण अध्ययन के द्वारा ही इसका हल सम्भव है इसका महत्त्व दिन प्रति दिन निम्न कारणों से बढ़ता जा रहा है।

1. पर्यावरण विकास का मूल

प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से ही समाज विकास करता है। मनुष्य अपने बौद्धिक ज्ञान से पर्यावरण का उपयोग कर विकास करता हैं विकास की अंधी चाह में वह पर्यावरण को हानि भी पहुँचा देता है। पर्यावरण अध्ययन के द्वारा विनाष रहित विकास की कल्पना साकार की जा सकती है।

2. पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण आज की मुख्य पर्यावरण समस्या हैं। यह आधुनिक युग का एक बहुचर्चित विषय व आधुनिक सभ्यता द्वारा उत्पन्न एक गम्भीर व भयानक समस्या है। प्रदूषण वायु, जल व स्थल के रसायनिक भौतिक व जैविक गुणों में होने वाला ऐसा अवांछनीय परिवर्तन है जो कि मानव जीवन, औद्यौगिक प्रगति, जीवन की परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं। वर्तमान में पर्यावरण में मुख्यतः जल, वायु, ध्वनी तथा मृदा प्रदूषण तीव्रता से बढ़ता जा रहा है। इनका लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत असर हो रहा है। ये अनेक बीमारियों के षिकार हो रहे हैं तथा इनका स्वाभाविक विकास रूक रहा है। पर्यावरण अध्ययन द्वारा पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सकता है तथा मनुष्य एवं अन्य जीवों को उसके दुष्प्रभावों से बचाया जा सकता है।

3. पर्यावरण के विविध घटकों का जीवन पर प्रभाव

सभी जीव अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनषील होते है तथा पर्यावरणीय घटकों का जीवों पर प्रभाव पड़ता है। सन्तुलित पर्यावरण में जीवों का स्वस्थ विकास होता है तथा असन्तुलित पर्यावरण में पर्यावरण के घटक स्वस्थ जीवन को बाधित करते है।

4. जलवायु में परिवर्तन

जलवायु में होने वाले ये परिवर्तन भी प्राकृतिक प्रक्रियाओं के कारण होते है। पिछले कुछ वर्षो से जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, शहरीकरण, वन विनाष, स्वचालित वाहनों की बढ़ती संख्या, तकनीकी विकास, कृषि विकास तथा उच्च जीवन स्तर आदि के कारण पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुंचा है तथा जलवायु के विभिन्न तत्वों (ताप, वायुदाब, आर्दता, वर्षा, वायु वेग आदि) में व्यापक परिवर्तन हुए है। इन परिवर्तनों के कारण आज संपूर्ण मानव सभ्यता को खतरा उत्पन्न हो गया है। पृथ्वी जलवायु परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण वैष्विक ताप वृद्धि हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण ध्रुवों पर बर्फ पिघल रही है, इससे समुद्रों का जल स्तर धीरे धीरे बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन से सुखें में तो वृद्धि होगी परन्तु खाद्यान्न उत्पादन में कमी अवष्य आएगी। जलवायु परिवर्तन से वर्षा में कमी, एवं खाद्यान्न उत्पादन में कमी हो रही हैं। जलवायु परिवर्तन से अनेक संक्रामक रोगों का प्रकोप भी बढ़ रहा है। इस अध्ययन के द्वारा समुचित उपाय करके जलवायु परिवर्तन पर अंकुष लगाया जा सकता है।

5. वन एवं जीव जन्तु संरक्षण का ज्ञान

वन्य जीवों के आवास पर धरती पर बड़े जटिल बुद्धिमान तथा महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिकी तन्त्र है। वन विनाष के साथ ही वन्य जीवों के विनाष की कहानी प्रारम्भ हुई थी। तीव्र पर्यावरणीय परिवर्तनों के कारण भी वन्य जीवों का विलोपन हुआ है। इस प्रकार वनों के अंधाधुंध दोहन, विनाषकारी वनाग्नि ;ध्वतमेज पितमद्ध भीषण भूस्खलन एवं पषुपक्षियों के विविध प्रजातियों के अवैध षिकार के कारण इनको खतरा बन गया है।

6. जल संकट

वर्तमान में जल संकट भी निरन्तर बढ़ता जा रहा है। वर्षा की कमी, वनों के विनाष के कारण जल का मिट्टी से सम्बन्ध टूटना, जल प्रबन्धन का अभाव, जल प्रदूषण, जल की व्यर्थ बर्बादी, बढ़ती मांग आदि के कारण जल संकट निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

7. ठोस अपषिष्ट निस्तारण

तीव्र गति से बढ़ रहे औद्योगीकरण तथा नगरीय विकास के ठोस अपषिष्टों के निस्तारण की समस्या को जन्म दिया है। ठोस अपषिष्टों से उत्पन्न अपषिष्ट, अन्य औद्योगिक अपषिष्ट, एवं नगरपालिका अपषिष्ट आदि प्रमुख है। इनके निस्तारण के अभाव में भूमि प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है।

8. पर्यावरण प्रबन्धन में योगदान

पर्यावरण अध्ययन द्वारा ही पर्यावरण प्रबन्धन को प्रभावी बनाया जा सकता है। पर्यावरण अध्ययन के द्वारा व्यक्तियों को जागरूक करने में सहायता मिलेगी जिससे पर्यावरण प्रेमियों की संख्या में वृद्धि होगी।

छायावादी काव्य में प्रकृति का सुक्ष्म और उत्कट रुप दिखाई देता हैं। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा के काव्य में पर्यावरण चेतना यत्र तत्र पाई जाती हैं। पंत को तो प्रकृति का सुकुमार कवि भी कहा गया है पंत की यह पंक्तियां देखने योग्य है –

'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया

तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूं लोचन'[8]

9. विष्व तापमान में वृद्धि

विष्व तापमान में वृद्धि पर्यावरण की सबसे प्रमुख समस्या है। पर्यावरण प्रदूषण, हरित गृह प्रभाव, ओजोन क्षमीकरण आदि। अनेक पर्यावरणीय समस्याओं का सम्मिलित प्रभाव विष्व तापमान में वृद्धि कर रहा है, विष्वव्यापी तापमान का सम्पूर्ण जीव समुदाय पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। विष्व तापमान में वृद्धि के नजदीकी तथा दूरगामी, दोनों प्रभाव मानव स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए घातक होंगे। नजदीकी प्रभावों में तापीय वृद्धि के कारण मृत्यु, सूखा, तूफान, बाढ़ एवं पर्यावरण अवनयन प्रमुख है तथा दूरगामी प्रभावों में संक्रमण एवं सम्बन्धित रोग, खाद्य समस्या, अकाल तथा जैव विविधता को खतरा पैदा होगा। इसके अतिरिक्त तापमान वृद्धि से ध्रुवीय तथा उच्च पर्वतीय बर्फ पिघलने से समुद्री किनारे पर स्थित कई षहर डूब सकते हैं।

सन्दर्भ

1 सुमित्रानंदन पंत, छोड़ द्रुमों की मृदु छाया कविता से

2 जयषंकर प्रसाद – कामायनी का प्रथम छंद, चिंता सर्ग से

3 सविन्द्र सिंह, जैव भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन

4 मैथिलीषरण गुप्त पंचवटी कविता से

5 सुरेष श्रीवास्तव – लेख प्रतियोगिता दर्पण, मार्च, 2009

6 मधु अस्थानापर्यावरण एक संक्षिप्त अध्ययन

International Research Journal IJNRD Research Through Innovation